

DPN 6457

Title :

1. महारुद्र कवच / MAHĀRUDRA KAVACA
2. बोधमञ्जरी / BODHAMANJĪRĪSTĪTRA

Run. No. 7182

Cat. No. 189

Micro. No.

Subject Stotra

Religion : Hindu / Bauddha

Language : ☒ Skt. / ☐ New. / ☐ Nep. / ☐ Skt.- New. / ☐ Maith.- New. / ☐ New.- Nep. /

Size in cms. 16.5 X 8

Folios 13

Lines (in a page) 6

☒ Compl. / ☐ Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator 2. Śaṅkarācārya

Scribe / donor

Date: ☒ NS / ☐ SS / ☐ VS / ☐ KS 905

Ruler / place

Script : ☒ New. / ☐ Dev. / ☐ Bhuj. / ☐ Ran. /

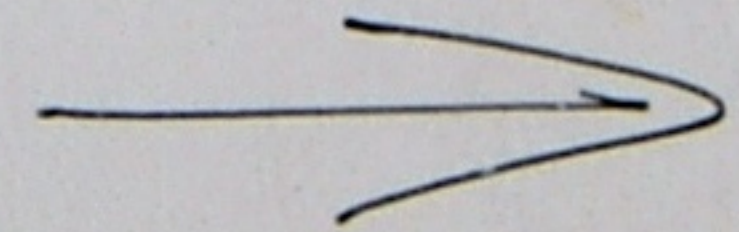
Illus. :

Material : palmleaf / ☒ paper / thyasaphu /

Condition : ☒ fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

Fol. 70a: 1. इति श्रीब्रह्मोत्तरखण्डे श्रीमहारुद्रकवचं सम्पुर्णं ॥ शुभम्भूयात् ॥
सं 905 श्रीयोगन कृष्ण 90 स्वमवल रकुनु वेद्य सिध्दा शुभं ॥



2. इति श्रीशंकराचार्यविरचितं बोधमंजरी (चर्पटमंजरी) -
स्तोत्रं संपूर्णं समाप्तं शुभ ॥

१८८ महाशिव
मन्त्रः

श्रीगणेश

नमः शिवाय ॥ ॥ अष्टरुतवाव ॥ नमस्तुत्तामहदर्ववि
ष्यथापिनमिष्वनं ॥ वक्ष्ये निवमयं वर्म सर्वत्र काकनं
नृणां ॥ १ ॥ ॥ ७ ॥ वीरं समासीना यथावत्कल्पितासन
॥ १ ॥ जितद्विया जितपागः विनयं च विवमयं ॥
॥ २ ॥ हस्तु बुनी कान्तरसंनिविष्टं स्वतजसा व्याप
नरो वका ॥ ॥ अतींद्रियसुद्धमननमाद्यं

आयत्यत्रानंदमयमिह ॥ ३ ॥ ध्यातावधूताखिलकर्मविक
ल्पैरेवितानंदनिमग्नवता ॥ ४ ॥ षष्ठकुर्यात्तत्प्राप्तसमाहिः
तात्मा रोगे वनकुर्यात्कवचनरुद्रा ॥ ५ ॥ सांपातुदेवो
खिलदेवतात्मा संसारकूथपतिर्गरीश ॥ ६ ॥ तन्नाम
दिव्यं वनमंक्तं रूपं धूनीतुमसर्वमद्यं हृदि स्मृतं ॥
॥ ७ ॥ सर्वसां नरुद्रुविष्वमुखिः शक्तिर्मयानंदघनः

विद्यामा ॥ अक्षयनीयान् रत्नकिंनरक ४ सन्नी ४ वन ४
 यातु लया दलकात ॥ १॥ यादुस्व नृप न विरहि
 विष्णु पायात्स ह मग्नि नि ॥ ४ ॥ मुक्ति ॥ यापी स्व न
 प ॥ नृ म क नो नी स जी व न न क तु मां ज ल ल
 ॥ १॥ क ल्मा व साने जु व नो दि द ग्ध ॥ स वी नियो न
 ल नि रु नि नि ल ॥ स काल रू डी व तु मां द ल ॥ धी
 त्या दि ली न न र वि ला च ना पा न् ॥ ४ ॥ शु दि क वि द्यु

क न का व ल सा वि द्या व रा ली ति कू भ त या नि ॥ व तु
 म्भू ख सु ल्य रू मि न ॥ ४ ॥ पा चो स्ति ता न क तु मा म ज
 म ॥ १॥ कू भ त य वौ कू ल या न ॥ ल क पा ल टं का
 क र न द धा न ॥ व तु म्भू ख नी ल र वि मि न ॥ ४ ॥ पा
 या द धा त्रा दि नि द कि न स्या ॥ १० ॥ कू न्द न्द्र वी र व सु टि का
 व ल सा व द क मा ला व न दा ल यं क न ४ ॥ कू भ त

15

10

5

0

cmts

5

10

15

श्रीसप्त

दार्मुलवव्यान्ममधर्मी वाहू वृद्धकलंदकमरवन्त
 को व्यातु ॥ १४ ॥ ममादत्रपातु गिनी नुधन्वा मध्वम
 ४ माव्यान्मदनातकात्रि ॥ १५ ॥ हवताताममपातुनारि
 पायात्कटिधूजटिनीध्वनाम ॥ १६ ॥ उरुद्वयं पातु
 वरमिना जंघा द्वयं पूगवकं उरवात ॥ १७ ॥ जानूद्व
 यं मजगदिध्वनी व्यातुः पादो ममाव्यात्सूत्रवैद्यपाद ॥ १८ ॥

शिव

४

॥ १४ ॥

महस्वत्रपातुदिनादियाम मीमध्वनाम वगु वाम
 दव ॥ १९ ॥ उर्यं वक ४ पातु हतीययाम वषध्वज ४
 पातुदिनी नयाम ॥ २० ॥ पायान्निधमदो ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥
 नो मां गं गमध नो नदगु मां निधी ॥ २१ ॥ गोत्री पति ४
 पातु निधम वसाने मध्व जया नदगु सर्वकाल ॥
 ॥ २० ॥ अर्क ४ स्मिन् नदगु ४ क गो मां स्मिन् ४ सदा

श्रीसदा

पादुवहिः स्फुटं मी॥ तदन्तः पादुपतिः पद्मनी
सदा। विवा नदुमी समन्तात् ॥ २१ ॥ निष्कमः
यादुवने कनाथः पाजा नृपुर्जेनै पुमथः प्रिनाथः ॥
वेदा न वेदा वदुमी निषर्गः साम व्यथः पादुगितः
श्यानी ॥ २२ ॥ मार्गः प्रमी नदुमी लकै ०४ होलादि
इर्जिष्टु प्रनृपात्रिः ॥ २३ ॥ नृप्य वासादि महापुवा

नि व

जे

सुपाजान्मग व्याध उदा नृकिः ॥ २३ ॥ कर्णान काटाः
पपद्रुप कोपः स्फुटं नृहासा चलिता नृका ॥ २४ ॥ धा न
त्रिसेना नृवदुर्निवा नृमहाख्या डक गुवी नृरुड ॥
॥ २४ ॥ पत्युध्वमार्तं नृनृथ वनृथ सहसुल कायुतः
काटि लीषर्ग ॥ २५ ॥ नृकोहिनी नृना नृमा नृनायिनी किंया
नृजाया नृकृ नृध नृया ॥ २६ ॥ निहं गुहा नृनृपुल

यान ताविकं कलत्रिभूलैरिष्टानं कस्य ॥ १८ ॥ इत्य
सिंहकं व कादिहिं मानसं गुणयतीति धनं ४ पिना
क ॥ २० ॥ नानादिद्या तान्नर कादि पागात् सदाधिः
की नक्षत्रमा मनाथ ॥ २१ ॥ स्वप्न २४ कृष्ण ल इति २
मनस्य इति क इत्येव न इति इत्येव ॥ २२ ॥
उत्पानेन पविषतीति मसुक्तं हास्ति वाधाध्यना ४

यगुमजगतामधी ॥ २३ ॥ • ॥ ॐ नमो रग वने सदाधि
वाय सकल तत्वात्मकाय सकल तत्त्व विज्ञाया
सकल लोके कर्तुं सकल लोके कर्तुं सकल लो
के कर्तुं सकल लोके कर्तुं सकल लोके कर्तुं
साक्षि ॥ सकल लोके कर्तुं सकल लोके कर्तुं
नृपतय सकल दुर्गति नास्ति ॥ २४ ॥ नाय सकल जग

श्रीसप्त

दहर्षं क गायः सकल लोके कर्णं क गायः ॥ १ ॥
 शरव गायः ॥ २ ॥ निजा वासायः निर्गुणायः नि
 रूपायः निराहारायः निरामयायः निःस्पृहायः
 निःकलंकायः निरनंकायः निर्द्वन्द्वायः निः
 र्णकायः निर्मलायः निर्ममायः निरुपमविर
 वायः निराधम गायः नित्यं दुःखं निःपूर्यः सच्चि

श्रीव

॥

दानं दानं दानं पत्रमस्तु पुकां लोकां रूपायः ॥ ३ ॥
 यमहा रूपायः महाशौकः वीरहडावता न महाशैव
 क महाकोलः रूपायः कथा लमा लोकां धनं खट्वीः
 गच्छ चर्म पांशुं कृणु मरुतिं भूलः वायः
 वामन गदाः शक्तिः हिंदिपालः ताम्रमूला लम्ब
 मूलः पादाः पत्रं पत्रिद्यः उरुं जीः शतं द्विचः

श्रीसदा

कायूधलीषमकनसहस्रमुखदंष्ट्रकनाल
 विकटादृहासविस्त्रात्रितनागानुहात्रनागानु
 वलस्यनागानुर्वर्धनरुद्रर्षीजयर्षीकक
 प्रियूनीतकविद्रुपाकविष्टवाहोविष्टव्यन
 विष्टव्यनवष्टवहवाहनविष्टविक्रमविः
 स्वनामरवसर्वतोत्रकनकमकाहालनाल

निव

८

महामहर्षीनाथपरभागलक्ष्मीसोदयसोदय
 विषसुष्यरूपानमयर्षीनरुषीमात्रयर्ममभर्षी
 उच्चाटयर्षूलनविदात्रयर्षुधनवर्षीरिषिरस्वर्षी
 नक्षिषिरस्वर्षीगनविषाधयर्षुधनननिः
 पषयर्षवाहोःसंतापयर्षनक्षीसिरीषयर्षहंता
 विजावयर्षकृष्णाधुवनालमानिगनवृक्षनाकः

श्रीसदा

[illegible]

मि०

॥०॥ अथ रुड वाच ॥०॥ येन त्वं वर्यं हो वं व न दंवा
द नं मया ॥ सर्व वाधा पुष्प मनी न ह स्यं सर्व दिहिनी ॥
य ४ सदा धा न य न्म र्त्य ४ हो वं क व च मूल मी न रा
स्य जा य न का पि ह र्यं हो न मू र हा त् ॥ की न्म य ४
या फ म्म ल्प र्थी महा प्रा ग ह नी पि वा । स य ४ स र व म
वा प्रा नि दी र्घ मा य् ४ विं द नि ॥ सर्व वाधा पुष्प मः

श्री

न. सोमंगल्यविवर्द्धन। या धल क वं च हो वं स द
 वे तपि पूषते ॥ महापात क संधो नैर्मृ. यत जीष
 पात केश दहान्क मृकि मा प्राति. शिव व मी न रा वत
 ४॥ ॥ ॐ ति धी व श्रा त र र क नु ॥ धी महा दू ड क व री
 समा की ॥ ॥ ॐ ह मू या त् ॥ ॥ नमः शि वा या ॥ सी ह ॐ
 धी अन दू प्र १० स्व म वा ल र न् न वा य सि ध य का ॐ

शिव

१०

॥ ॥

११ ॥ १ ॥ ॐ ग ल भ य न मा ॥ ॥ दिन सा य त र नि सा र्य पा त १ ॥ शि धी त
 व स नो पु न रा या त ॥ का त क्रि ज नि ग रु था यू सु द पि न म
 १ ॥ सा वा य ॥ ॥ ए र ग्य वि न्दं ए र ग्य वि न्दं ग्य वि न्दं ए र
 मू ध म न् प्रा फ स न हि न म न् ग न हि न ही त रु नि पू क र
 क र न ॥ १ ॥ वा ल सा य न्की ग ण क सु न सा य न्क र ॥ १
 क १ ॥ १ ॥ सा य वि न्दं ना म ग र १ प त म व क्त नि का पि न ल ग्न
 ॥ १ ॥ ए र ग्य वि न्दं ॥ १ ॥ या व दि की पा र्ज न ण क सा य नि
 १ ॥ १ ॥ ग्य वि न्दं

११

उपयोज्यो लोलेन कः पञ्चाङ्गावतिजर्जलदहवात्तक
विनपुच्छति लोह ॥ एतद्विन्दे ॥ ३ ॥ वयसि गतकः का
मविचारः २ ॥ ३ ॥ कनीले कः २ कासात्र २ कीन्याविह कपवात्र
हीन तत्त्व कः २ संसारथा एतद्विन्दे ॥ ४ ॥ अङ्गलिगं प
लितम् ३ ॥ दधीन विहिन २ ज्ञानं ३ ॥ ५ ॥ दृष्ट्या गतिगृहि
त्वा दं ३ ॥ तदपि नमं यथा सायी ३ ॥ एतद्विन्दे ॥ ६ ॥ क
स्यैकीदं कृतम् आगतः कामी जननि कामिना २ ॥ ७ ॥ ति
पलितवयसर्वमसारं ॥ सर्वं पश्यति स्वप्रविशालं ॥

एतद्विन्दे ॥ ६ ॥ १ ॥ तदिलाम् दितल चितके ३ ॥ का
षा अं वलवदूकतये ३ ॥ यः ३ ॥ यन्मं यतिप ३ ॥ यतिम
काङ्क्षदलनिमित्तं वदूकतलपं ॥ एतद्विन्दे ॥ ७ ॥ २ ॥
३ ॥ एतद्विन्दे ॥ ८ ॥ एतद्विन्दे ॥ ९ ॥ एतद्विन्दे ॥ १० ॥
३ ॥ एतद्विन्दे ॥ ११ ॥ २ ॥ मिथ्या कर्षित विलयितकं
३ ॥ पुन्या पुन्य विवर्जितपं ॥ नयं नायः कस्य लोके ॥

ग्रावद

२२

5

0 c.mts

5

10

15